शैल चित्रों में दिखी हजारों साल पुरानी सभ्यता

विज्ञान केंद्र

लखनऊ | निज संवाददाता

अगर आप हजारों वर्ष पहले के लोगों की जीवन शैली व सामाजिक परिवेश को जानना चाहते हैं तो आपको अलीगंज स्थित आंचलिक विज्ञान नगरी में आना पड़ेगा। मंगलवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से बीरबल साहनी पुर्नविज्ञान संस्थान के सहयोग से शैल चित्र प्रदर्शनी लगाई है।

17 मई तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में भारतीय उपमहाद्वीप समेत 5 महाद्वीपों के 100 शैल चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। प्रदर्शनी का उद्घाटन बीरबल साहनी पुर्नविज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो सुनील बाजपेई ने किया। उन्होंने कहा कि देश के पास इतनी बड़ी सांस्कृतिक धरोहर है। इस धरोहर को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए सुव्यवस्थित तरीके से इन्हें सूचीबद्ध करना व संरक्षण आवश्यक है। उन्होने कहा कि दुर्भाग्य से पश्चिमी देशों की तुलना में यहां जागरूकता की कमी है।

अब धीरे धीरे भारत में भी इस विषय में जागरूकता बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि भारत में करीब 14000 वर्ष पुराने शैल चित्र मौजूद है। देश में करीब 25 से 30 हजार वर्ष पहले पाने जाने वाले शुतुरमुर्ग के अंडे भी मिले हैं। विशिष्ट अतिथि एनआरएलसी के महानिदेशक डॉ बीवी हड़बड़ ने कहा कि देश में करीब 1,300 शैल चित्र की साइटें हैं, पर इनमें से बहुत कम ही साइटें ऐसी हैं जिनका संरक्षण हो रहा है।

इन साइटों पर खनन से इनके अस्तित्व का खतरा बना हुआ है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैल चित्र परियोजना समन्वयक डॉ. बीएल मल्ला ने कहा कि सारी दुनिया में मिलने वाले शैल चित्रों में काफी समानता है। इससे पता चलता है कि मानव का मूल चिंतन एक जैसा है। चाहे उसका जन्म कहीं भी हुआ हो। इस मौके पर बीरबल साहनी पुर्नविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक व उत्तर प्रदेश में शैल चित्र प्रलेखन के समन्वयक डॉ सीएम नौटियाल व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संयुक्त सचिव वीना जोशी व आचंलिक विज्ञान नगरी के समन्वयक उमेश कुमार ने भी विचार व्यक्त किया।

आंचलिक विज्ञान केंद्र में मंगलवार को शैल चित्र प्रदर्शनी लगाई गई • हिन्दुस्तान

इन जगहों के हैं शैल चित्र

मिर्जापुर व सोनभद्र, उत्तराखंड के अल्मोड़ा, उड़ीसा के संभलपुर, झारखंड का हजारीबाग, जम्मू कश्मीर, लेह, केरला, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश के अलावा स्पेन, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, स्वीडन, यूरोप, इटली